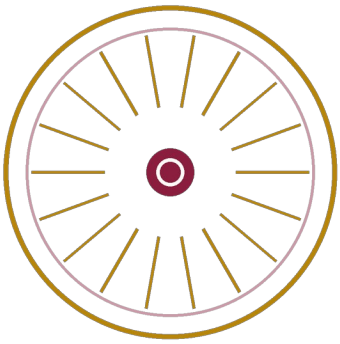

अध्याय 8: अक्षरब्रह्मयोग

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **8.01**

> अर्जुन उवाच |
>
> किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम |
>
> अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते || **01** ||

हिन्दी अनुवाद:

अर्जुन बोले—हे पुरुषोत्तम! वह 'ब्रह्म' क्या है? 'अध्यात्म' क्या है? 'कर्म' क्या है? 'अधिभूत' नाम से क्या कहा गया है और 'अधिदैव' किसको कहा जाता है?

सरल व्याख्या:

अर्जुन भगवान से उन सात शब्दों की व्याख्या पूछ रहे हैं जो जीवन और मृत्यु के रहस्य से जुड़े हैं। वे जानना चाहते हैं कि उस परम सत्ता, जीवात्मा, सृष्टि के कर्मों और भौतिक जगत के पीछे का वास्तविक आधार क्या है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... तत्वज्ञान को समझने के लिए शब्दों के वास्तविक और आध्यात्मिक अर्थों को जानना आवश्यक है।

श्लोक संख्या: **8.02**

> अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन |
>
> प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः || **02** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे मधुसूदन! यहाँ 'अधियज्ञ' कौन है और वह इस शरीर में कैसे स्थित है? तथा युक्त चित्त वाले पुरुषों द्वारा अंत समय में आप किस प्रकार जानने में आते हैं?

सरल व्याख्या:

अर्जुन पूछते हैं कि इस शरीर के भीतर होने वाली यज्ञ रूपी क्रियाओं का स्वामी कौन है? और सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न—मृत्यु के समय, जब इन्द्रियाँ और मन साथ छोड़ रहे होते हैं, तब मनुष्य किस प्रकार परमात्मा को याद रख सकता है?

> यह श्लोक हमें बताता है कि... मृत्यु के समय की चेतना ही जीवन भर की साधना का अंतिम परिणाम होती है।

Satyanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **8.03**

> श्रीभगवानुवाच |
>
> अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते |
>
> भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः || **03** ||

हिन्दी अनुवाद:

श्री भगवान बोले—परम अक्षर (जिसका कभी विनाश न हो) 'ब्रह्म' है, अपना स्वरूप अर्थात जीवात्मा 'अध्यात्म' नाम से कहा जाता है और भूतों के भावों को उत्पन्न करने वाला जो त्याग (सृष्टि की रचना आदि) है, वह 'कर्म' नाम से कहा गया है।

सरल व्याख्या:

भगवान उत्तर देते हैं: 1. वह अविनाशी तत्व ब्रह्म है। 2. शरीर के भीतर जो 'स्व' (आत्मा) है, वही अध्यात्म है। 3. जीव की उत्पत्ति और विकास के लिए जो भी विसर्ग (प्रयास या त्याग) होता है, वह कर्म है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ब्रह्म अविनाशी है और आत्मा उसी का अंश है, जबकि कर्म सृष्टि के चक्र को चलाने वाली शक्ति है।

श्लोक संख्या: **8.04**

> अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम् |
>
> अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर || **04** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे देहधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन! उत्पत्ति-विनाश वाला स्वभाव 'अधिभूत' है, हिरण्यमय पुरुष (ब्रह्मा) 'अधिदैव' है और इस शरीर में मैं (वासुदेव) ही 'अधियज्ञ' हूँ।

सरल व्याख्या:

संसार की हर नाशवान वस्तु 'अधिभूत' है। सृष्टि का संचालन करने वाली दैवीय शक्तियाँ 'अधिदैव' हैं। और इस शरीर के भीतर जो अंतर्यामी रूप में बैठकर सब कर्मों और यज्ञों का फल देने वाला साक्षी है, वह साक्षात् भगवान ही हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... भौतिक जगत, दैवीय शक्तियाँ और हमारे भीतर का साक्षी—सब एक ही परमात्मा के विभिन्न विस्तार हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **8.05**

> अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् |
>
> यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः || **05** ||

हिन्दी अनुवाद:

जो पुरुष अंत समय में भी मुझको ही स्मरण करता हुआ शरीर को त्याग कर जाता है, वह मेरे साक्षात् स्वरूप को प्राप्त होता है—इसमें कुछ भी संशय नहीं है।

सरल व्याख्या:

यह मृत्यु के समय की महानतम मुक्ति का सूत्र है। शरीर छोड़ते वक्त मनुष्य के मन में जो विचार होता है, वही उसकी अगली गति तय करता है। यदि अंतिम क्षण में केवल परमात्मा का स्मरण रहे, तो वह व्यक्ति पुनर्जन्म के चक्र से छूटकर सीधे परमधाम को प्राप्त होता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... अंतिम स्मृति ही मनुष्य की शाश्वत गति का निर्धारण करती है।

श्लोक संख्या: **8.06**

> यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् |
>
> तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः || **06** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! यह मनुष्य अंत समय में जिस-जिस भी भाव को स्मरण करता हुआ शरीर त्यागता है, वह उस-उस को ही प्राप्त होता है; क्योंकि वह सदा उसी भाव से भावित रहा है।

सरल व्याख्या:

अंतिम स्मृति कोई आकस्मिक घटना नहीं है। जीवन भर हम जिन विचारों में डूबे रहते हैं, वही विचार मृत्यु के समय उभर कर आते हैं। यदि जीवन भर संसार का चिंतन किया, तो अंत में भी वही याद आएगा और उसी के अनुसार अगला जन्म मिलेगा।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... जीवन भर की मानसिक स्थिति ही मृत्यु के समय के चिंतन का आधार बनती है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **8.07**

> तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च |
> मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् || **07** ||

हिन्दी अनुवाद:

इसलिए हे अर्जुन! तू सब समय में निरंतर मेरा स्मरण कर और युद्ध भी कर। इस प्रकार मुझमें अर्पित मन-बुद्धि वाला होकर तू निस्संदेह मुझको ही प्राप्त होगा।

सरल व्याख्या:

यह गीता का एक अत्यंत व्यवहारिक उपदेश है। भगवान यह नहीं कह रहे कि सब छोड़कर बैठ जाओ। वे कहते हैं: अपना कर्तव्य (युद्ध) करो, लेकिन मन से मेरा स्मरण (अनुस्मरण) करते रहो। जब हाथ काम में और मन भगवान में लगा हो, तो जीवन स्वयं ही योग बन जाता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... कर्तव्य पालन और प्रभु-स्मरण का समन्वय ही सफलता और मुक्ति का मार्ग है।

श्लोक संख्या: **8.08**

> अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना |
> परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन् || **08** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे पार्थ! यह नियम है कि परमेश्वर के ध्यान के अभ्यास रूप योग से युक्त, अन्यत्र न जाने वाले चित्त से निरंतर चिन्तन करता हुआ मनुष्य परम प्रकाशमय दिव्य पुरुष (परमात्मा) को ही प्राप्त होता है।

सरल व्याख्या:

मन को एकाग्र करने के लिए अभ्यास की आवश्यकता है। जब साधक बार-बार अपने मन को भटकने से रोककर परमात्मा में टिकाता है, तो उसकी चेतना दिव्य हो जाती है। ऐसा अभ्यास करने वाला अंततः उसी दिव्य सत्ता में लीन हो जाता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... एकाग्रता और निरंतर अभ्यास ही ईश्वरीय साक्षात्कार की कुँजी है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **8.09**

> कविं पुराणमनुशासितार-मणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः |
>
> सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूप-मादित्यवर्णं तमसः परस्तात् || **09** ||

हिन्दी अनुवाद:

जो पुरुष सर्वज्ञ, अनादि, सबके नियन्ता, सूक्ष्म से भी अति सूक्ष्म, सबके धाता-विधाता, अचिन्त्य रूप, सूर्य के समान प्रकाशमान और अज्ञान से परे रहने वाले परमात्मा का स्मरण करता है।

सरल व्याख्या:

यहाँ परमात्मा के स्वरूप का ध्यान करने के लिए आठ विशेषण दिए गए हैं। वे सबसे पुराने (पुराण), सूक्ष्म (अणोरणीयांस), और अंधकार से परे प्रकाश स्वरूप हैं। ऐसे विराट और परम कृपालु देव का ध्यान करने से बुद्धि पवित्र होती है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा की महिमा का चिंतन करने से मन सांसारिक तुच्छताओं से ऊपर उठ जाता है।

श्लोक संख्या: **8.10**

> प्रयाणकाले मनसाचलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव |
>
> भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक्-स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् || **10** ||

हिन्दी अनुवाद:

वह भक्ति युक्त पुरुष अंत समय में भी योगबल के द्वारा भृकुटी के मध्य में प्राणों को अच्छी प्रकार स्थापित करके, निश्चल मन से स्मरण करता हुआ उस दिव्य स्वरूप परम पुरुष परमात्मा को ही प्राप्त होता है।

सरल व्याख्या:

यहाँ प्राण त्यागने की योगिक विधि का संकेत है। जिसने जीवन भर योग का अभ्यास किया है, वह मृत्यु के समय अपने प्राणों को आज्ञा चक्र (भृकुटी के बीच) में स्थित कर लेता है। भक्ति और योगबल का यह संगम उसे सीधे परमात्मा के धाम पहुँचा देता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... योग और भक्ति का पूर्ण समन्वय ही जीवन की अंतिम विजय है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **8.11**

> यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः |
> यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये || **11** ||

हिन्दी अनुवाद:
वेद के ज्ञाता जिसे 'अक्षर' कहते हैं, आसक्ति रहित यत्नशील संन्यासी जिसमें प्रवेश करते हैं और जिसकी इच्छा करने वाले ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, उस पद (लक्ष्य) को मैं तेरे लिए संक्षेप में कहूँगा।

सरल व्याख्या:
भगवान उस परम पद की महिमा बता रहे हैं जिसे पाने के लिए ऋषि-मुनि कठोर तप और संयम का पालन करते हैं। वह अवस्था 'अक्षर' है, जिसका कभी क्षय नहीं होता। इस मार्ग पर चलने के लिए इन्द्रियों का संयम और ईश्वर की प्राप्ति की तीव्र इच्छा अनिवार्य है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संयम और तीव्र वैराग्य की आवश्यकता होती है।

श्लोक संख्या: **8.12 - 8.13**

> सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च |
> मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम् || **12** ||
> ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् |
> यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् || **13** ||

हिन्दी अनुवाद:
सब द्वारों (इन्द्रियों) को रोककर, मन को हृदय में स्थिर करके, अपने प्राणों को मस्तक (भृकुटी) में स्थापित करके योग-धारणा में स्थित होकर; जो पुरुष 'ॐ' इस एक अक्षर रूप ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ और मेरा स्मरण करता हुआ शरीर त्याग कर जाता है, वह परम गति को प्राप्त होता है।

सरल व्याख्या:
यहाँ शरीर छोड़ने की उच्चतम योगिक विधि बताई गई है। बाहरी जगत से नाता तोड़कर (इन्द्रिय संयम), मन को भीतर समेटकर और 'ॐ' के नाद में लीन होकर जो प्राण त्यागता है, वह सीधा परमात्मा में विलीन हो जाता है। 'ॐ' परमात्मा का ही शब्द-स्वरूप है।

> ये श्लोक हमें बताते हैं कि... शब्द-ब्रह्म 'ॐ' का जाप और एकाग्रता ही अंत समय में मुक्ति का द्वार खोलती है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **8.14**

> अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः |
> तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः || **14** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे पार्थ! जो अनन्य चित्त होकर सदा ही निरंतर मेरा स्मरण करता है, उस नित्य मुझमें युक्त हुए योगी के लिए मैं सुलभ (आसानी से प्राप्त) हूँ।

सरल व्याख्या:
भगवान यहाँ सबसे सरल मार्ग बताते हैं। जो व्यक्ति दिन-रात, सोते-जागते, हर काम करते हुए केवल परमात्मा को ही याद रखता है, उसके लिए ईश्वर दूर नहीं हैं। कठिन योग क्रियाओं से भी अधिक प्रभावशाली 'निरंतर स्मरण' है। भगवान अपने ऐसे प्रेमी भक्त के वश में हो जाते हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... निरंतरता और अनन्य प्रेम ही परमात्मा को पाने का सबसे सुलभ साधन है।

श्लोक संख्या: **8.15**

> मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् |
> नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः || **15** ||

हिन्दी अनुवाद:
मुझको प्राप्त होकर वे महात्मा पुरुष, जो परम सिद्धि को प्राप्त हो गए हैं, इस दुखों के घर और क्षणभंगुर पुनर्जन्म को प्राप्त नहीं होते।

सरल व्याख्या:
संसार को 'दुःखालय' (दुखों का घर) कहा गया है। यहाँ जो भी जन्म लेता है, उसे कष्ट भोगने ही पड़ते हैं। लेकिन जो परमात्मा के धाम पहुँच जाते हैं, वे इस जन्म-मरण के चक्र से हमेशा के लिए मुक्त हो जाते हैं। उन्हें फिर कभी इस नश्वर संसार में लौटकर नहीं आना पड़ता।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... मोक्ष का अर्थ है दुखों के चक्र से सदा के लिए छुटकारा पाना।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **8.16**

> आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन |
> मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते || **16** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे अर्जुन! ब्रह्मलोक से लेकर सभी लोक पुनरावर्ती हैं (अर्थात वहाँ से वापस लौटना पड़ता है); किन्तु हे कुन्तीपुत्र! मुझको प्राप्त होने पर पुनर्जन्म नहीं होता।

सरल व्याख्या:

सृष्टि में जितने भी स्वर्ग या उच्च लोक हैं, वे सब अस्थायी हैं। वहाँ पुण्य खत्म होने पर फिर से पृथ्वी पर जन्म लेना पड़ता है। केवल परमात्मा का 'परमधाम' ही ऐसा स्थान है जहाँ पहुँचने के बाद फिर कभी पतन नहीं होता। ईश्वर की प्राप्ति ही एकमात्र स्थायी लक्ष्य है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वरीय धाम के अतिरिक्त ब्रह्मांड का हर स्थान परिवर्तनशील और अस्थायी है।

श्लोक संख्या: **8.17**

> सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः |
> रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः || **17** ||

हिन्दी अनुवाद:

जो पुरुष ब्रह्मा के एक दिन को एक हजार चौकड़ी युगों तक की अवधि वाला और रात्रि को भी एक हजार चौकड़ी युगों तक की अवधि वाली जानते हैं, वे पुरुष काल (समय) के तत्व को जानने वाले हैं।

सरल व्याख्या:

यहाँ समय की विशालता का वर्णन है। ब्रह्मा (सृष्टि के रचयिता) का एक दिन और एक रात मनुष्य के करोड़ों वर्षों के बराबर होती है। जो इस विराट समय चक्र को समझते हैं, वे जानते हैं कि यह पूरी सृष्टि एक बहुत बड़े नाटक की तरह है जिसमें समय के साथ सब कुछ बदलता रहता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... काल की गणना अत्यंत विशाल है और परमात्मा इस काल के भी स्वामी हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **8.18**

> अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे |
> राज्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके || **18** ||

हिन्दी अनुवाद:

ब्रह्मा के दिन के प्रवेश काल में संपूर्ण दृश्य जगत अव्यक्त (ब्रह्मा के सूक्ष्म शरीर) से उत्पन्न होता है और रात्रि के प्रवेश काल में उस अव्यक्त में ही विलीन हो जाता है।

सरल व्याख्या:

सृष्टि का बनना और मिटना एक निरंतर प्रक्रिया है। जब ब्रह्मा जागते हैं, तो संसार प्रकट हो जाता है (सृष्टि); और जब वे सोते हैं, तो सब कुछ फिर से सूक्ष्म रूप में सिमट जाता है (प्रलय)। यह चक्र अनादि काल से चल रहा है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... यह जगत कभी प्रकट होता है और कभी छिप जाता है, इसका मूल कारण सूक्ष्म प्रकृति है।

श्लोक संख्या: **8.19**

> भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयन्ते |
> रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे || **19** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे पार्थ! वही यह प्राणी समुदाय बार-बार पैदा होकर, प्रकृति के वश में हुआ, रात्रि के आने पर विलीन हो जाता है और दिन के आने पर फिर से उत्पन्न होता है।

सरल व्याख्या:

हम सभी जीव इसी प्रकृति के चक्र में फँसे हुए हैं। अपनी इच्छाओं और कर्मों के कारण हम बार-बार जन्म लेते हैं और मृत्यु को प्राप्त होते हैं। यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक हम ज्ञान के द्वारा इस चक्र को तोड़कर परमात्मा से नहीं जुड़ जाते।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... अज्ञान के कारण जीव प्रकृति के वश में होकर जन्म-मरण के फेर में पड़ा रहता है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **8.20**

> परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः |
> यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति || **20** ||

हिन्दी अनुवाद:

परन्तु उस अव्यक्त (सूक्ष्म प्रकृति) से भी परे जो दूसरा सनातन अव्यक्त भाव (परमात्मा) है, वह संपूर्ण भूतों के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता।

सरल व्याख्या:

जहाँ यह दृश्य जगत और सूक्ष्म प्रकृति (ब्रह्मा का सूक्ष्म शरीर) प्रलय में मिट जाते हैं, वहाँ एक ऐसी सत्ता भी है जो हमेशा रहती है। वह 'सनातन अव्यक्त' परमात्मा है। जब पूरी सृष्टि समाप्त हो जाती है, तब भी वह सत्ता ज्यों की त्यों बनी रहती है। वही हमारा वास्तविक घर है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा ही वह एकमात्र सत्य है जो प्रलय के बाद भी शेष रहता है।

श्लोक संख्या: **8.21**

> अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम् |
> यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम || **21** ||

हिन्दी अनुवाद:

जो 'अव्यक्त' और 'अक्षर' (अविनाशी) कहा गया है, उसी को परम गति कहते हैं। जिसको प्राप्त होकर मनुष्य वापस (संसार में) नहीं लौटते, वही मेरा परम धाम है।

सरल व्याख्या:

भगवान स्पष्ट करते हैं कि उनकी सर्वोच्च सत्ता इंद्रियों से परे (अव्यक्त) और कभी नष्ट न होने वाली (अक्षर) है। जीव का अंतिम लक्ष्य इसी अवस्था को पाना है। एक बार जब आत्मा इस ईश्वरीय प्रकाश में विलीन हो जाती है, तो उसे फिर से दुखों भरी इस मृत्युलोक की यात्रा नहीं करनी पड़ती।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा का धाम ही वह अंतिम गंतव्य है जहाँ पहुँचने के बाद पुनर्जन्म का भय समाप्त हो जाता है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **8.22**

> पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया |
> यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् || **22** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे पार्थ! वह परम पुरुष (परमात्मा), जिसके अंतर्गत संपूर्ण भूत स्थित हैं और जिससे यह संपूर्ण जगत व्याप्त है, अनन्य भक्ति द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

सरल व्याख्या:
वह ईश्वर, जिसने इस पूरे ब्रह्मांड को अपने भीतर समेटा हुआ है और जो कण-कण में समाया है, उसे केवल 'अनन्य भक्ति' (ऐसी भक्ति जिसमें ईश्वर के सिवा दूसरा कोई लक्ष्य न हो) से ही पाया जा सकता है। न ज्ञान, न कर्म, केवल प्रेमपूर्ण समर्पण ही उन्हें रिझाने का मार्ग है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर की सर्वव्यापकता को पहचानने का एकमात्र साधन निष्काम और अनन्य भक्ति है।

श्लोक संख्या: **8.23**

> यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः |
> प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ || **23** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे भरतश्रेष्ठ अर्जुन! जिस काल (मार्ग) में शरीर त्याग कर गए हुए योगी वापस न लौटने वाली गति को और जिस मार्ग में गए हुए वापस लौटने वाली गति को प्राप्त होते हैं, उस काल के विषय में मैं तुझे कहूँगा।

सरल व्याख्या:
यहाँ भगवान उन दो गुप्त मार्गों का संकेत दे रहे हैं जिनसे जीवात्मा मृत्यु के बाद गमन करती है। एक मार्ग वह है जहाँ से मुक्ति मिलती है और दूसरा वह जहाँ से लौटकर फिर जन्म लेना पड़ता है। 'काल' शब्द यहाँ मार्ग और समय की परिस्थितियों का प्रतीक है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... मृत्यु के समय की आंतरिक और बाह्य स्थितियाँ जीवात्मा की अगली यात्रा को प्रभावित करती हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **8.24**

> अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम् |
> तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः || **24** ||

हिन्दी अनुवाद:

अग्नि, ज्योति, दिन, शुक्ल पक्ष और उत्तरायण के छह महीने—इन मार्गों में शरीर त्याग कर गए हुए ब्रह्मवेत्ता (ब्रह्म को जानने वाले) पुरुष ब्रह्म को प्राप्त होते हैं।

सरल व्याख्या:

यह 'शुक्ल मार्ग' (प्रकाश का मार्ग) है। अग्नि, प्रकाश और सूर्य की बढ़ती शक्ति का समय (उत्तरायण) ज्ञान का प्रतीक है। जो योगी ज्ञान के प्रकाश में शरीर छोड़ते हैं, वे सीधे परमात्मा में मिल जाते हैं और उन्हें वापस नहीं आना पड़ता।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ज्ञान के प्रकाश में शरीर त्यागने वाले साधक परम पद को प्राप्त होते हैं।

श्लोक संख्या: **8.25**

> धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम् |
> तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते || **25** ||

हिन्दी अनुवाद:

धुआँ, रात्रि, कृष्ण पक्ष और दक्षिणायन के छह महीने—इन मार्गों में शरीर त्याग कर गया हुआ योगी चंद्रमा की ज्योति को प्राप्त होकर (स्वर्ग आदि में सुख भोगकर) वापस लौट आता है।

सरल व्याख्या:

यह 'कृष्ण मार्ग' (अंधकार का मार्ग) है। धुआँ और रात्रि अज्ञान या सकाम कर्मों के प्रतीक हैं। जो केवल स्वर्ग की इच्छा से शुभ कर्म करते हैं, वे उच्च लोकों में जाते तो हैं, लेकिन पुण्य क्षीण होने पर उन्हें फिर से मनुष्य योनि में जन्म लेना पड़ता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... फल की इच्छा से किए गए कर्म स्थायी मुक्ति नहीं दिला सकते, वे केवल अस्थायी सुख प्रदान करते हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **8.26**

> शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते |
> एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः || **26** ||

हिन्दी अनुवाद:
क्योंकि जगत के ये दो प्रकार के मार्ग—शुक्ल और कृष्ण—शाश्वत माने गए हैं। इनमें से एक (शुक्ल) द्वारा गया हुआ वापस नहीं लौटता और दूसरे (कृष्ण) द्वारा गया हुआ फिर वापस लौट आता है।

सरल व्याख्या:
ये दो मार्ग—प्रकाश और अंधकार, ज्ञान और अज्ञान—सृष्टि के प्रारंभ से चले आ रहे हैं। एक मार्ग मुक्ति की ओर ले जाता है और दूसरा जन्म-मरण के फेर की ओर। मनुष्य को स्वयं चुनाव करना होता है कि वह किस मार्ग पर अपनी चेतना को टिकाना चाहता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... संसार में केवल दो ही गतियाँ हैं—एक अमरता की ओर और दूसरी पुनर्जन्म की ओर।

श्लोक संख्या: **8.27**

> नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन |
> तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन || **27** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे पार्थ! इन दोनों मार्गों को तत्व से जानने वाला कोई भी योगी कभी मोहित नहीं होता; इसलिए हे अर्जुन! तू सब समय में योगयुक्त (परमात्मा में स्थिर) रह।

सरल व्याख्या:
जो इन मार्गों के रहस्य को समझ लेता है, वह कभी सांसारिक आकर्षणों में नहीं फँसता। वह जानता है कि असली सुख केवल परमात्मा के 'शुक्ल मार्ग' में है। इसलिए भगवान अर्जुन को निरंतर योग में स्थित रहने की सलाह देते हैं, ताकि अंत समय में चेतना स्वतः प्रकाश की ओर मुड़े।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... सत्य के ज्ञान से मोह का नाश होता है और निरंतर अभ्यास ही सुरक्षित यात्रा की गारंटी है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **8.28**

> वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम् |
> अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम् || **28** ||

हिन्दी अनुवाद:

योगी पुरुष इस रहस्य को तत्व से जानकर वेदों के पढ़ने में, यज्ञ, तप और दान आदि के करने में जो पुण्यफल कहे गए हैं, उन सबको निस्संदेह लांघ जाता है और सनातन परम पद को प्राप्त होता है।

सरल व्याख्या:

अध्याय का उपसंहार करते हुए भगवान कहते हैं कि शास्त्र पढ़ने, दान देने या तप करने से जो भी पुण्य मिलता है, वह सब योग के फल के सामने छोटा है। योगी को वह सब तो मिलता ही है, पर वह उनसे भी ऊपर उठकर उस आदि पुरुष परमात्मा को पा लेता है, जहाँ से सृष्टि शुरू हुई थी।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा की प्राप्ति का अनुभव समस्त धार्मिक क्रियाओं के फलों से कहीं अधिक महान है।

Satyaanubhuti Ashram

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्मयोगो नाम अष्टमोऽध्यायः ॥

Satyaanubhuti Ashram